अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का आधुनिक सिद्धान्त
General Equilibrium theory of International Trade
or
Modern theory of International Trade

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में सर्वप्रथम Adam smith ने Absolute cost difference (निरपेक्ष लागत सिद्धान्त) दिया था। तदुपरान्त Recardo ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का तुलनात्मक लागत सिद्धान्त स्थापित किया था।

Classical Economists के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं देशी व्यापार में अन्तर है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की कुछ विशेषताएँ है तथा इसकी अवस्थाओं में कुछ विशेष अन्तर है। जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के एक पृथक सिद्धान्त का औचित्य होता है। प्राकृतिक साधनों और भौगोलिक साधनों में अन्तर श्रम एवं पूंजी की अगतिशीलता, उत्पादन की अवस्थाओं में अन्तर, मुद्रा प्रणाली में अन्तर इत्यादि के आधार पर अन्तर्देशीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में मूलभूत अन्तर परम्परावादी (classical) अर्थशास्त्रियों ने माना था।

Ohlin ने परम्परावादी अर्थशास्त्रियों से भिन्न विचार प्रकट किया। उनका कहना था कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का तुलनात्मक

लागत सिद्धान्त यह तो स्पष्ट करता है कि दो देशों के व्यापार तुलनात्मक लागतों में अन्तर के कारण होता है किन्तु यह नहीं बताता कि दो देशों के लागत अनुपातों में अन्तर क्यों होता है। ~~जिसके प्रतिपादक~~ जिसके कारण प्रो० हेक्चर (Heckscher) एवं प्रो० ओहलिन (Ohlin) ने आधुनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। किया। आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार "दो देशों में व्यापार तुलनात्मक लाभ के अन्तर के कारण होता है तथा तुलनात्मक लाभ में अन्तर दो देशों में उत्पत्ति के साधनों की सापेक्षिक कीमतों में भिन्नता तथा विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में साधनों के विभिन्न अनुपातों के प्रयोग के कारण होता है।"

Ohlin के अनुसार 'International Trade is, but a special case of ~~International~~ Interlocal or Interregional trade.'

Ohlin के अनुसार देश के अन्दर का व्यापार क्षेत्रीय होता है और विदेशी व्यापार अन्तर्क्षेत्रीय होता है और क्षेत्रीय एवं अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार के कोई मूलभूत अन्तर नहीं होता है क्योंकि प्रायः उत्पादन के साधन जैसे श्रम एवं पूंजी दो देशों के बीच अगतिशील होते हैं ठीक इसी तरह उत्पादन के साधन देश के

लागतों में सापेक्षिक अन्तर के कारण होता है। और यह अन्तर दो कारणों से होता है।
प्रथम उत्पत्ति के साधनों की कीमतों में सापेक्षिक अन्तर होता है।
द्वितीय वस्तुओं के उत्पादन में उत्पत्ति के साधनों की आवश्यकता में सापेक्षिक भिन्नता होती है। उत्पत्ति के साधनों की कीमतों में सापेक्षिक अन्तर इसलिए होता है क्योंकि दो देशों में साधनों की सीमितता में सापेक्षिक अन्तर होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि एक देश उन वस्तुओं का विशिष्टीकरण और निर्यात करता है जिनके उत्पादन में सापेक्षिक रूप से उन साधनों की अधिक आवश्यकता होती है। जो उस देश के सापेक्षिक रूप से प्रचुर मात्रा में होने से सापेक्षिक रूप से सस्ते होते हैं।
यह सिद्धान्त निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है —
(1) व्यापार के लिए दोहरे मॉडल को लिया गया है जिसके दो देश, दो वस्तुएँ हैं उत्पत्ति के दो साधन श्रम एवं पूंजी है।
(2) दोनों देशों में स्वतन्त्र व्यापार है तथा परिवहन की कोई लागत नहीं लगती।
(3) दोनों देशों में ~~स्वतन्त्र बाजार~~ पूर्ण प्रतियोगिता है।
(4) प्रत्येक देश में उत्पत्ति के साधन पूर्ण रूप

Part - 1 (Next Page-2)

अन्दर धर्म, रितीरिवाज में विभिन्नता के कारण अगतिशील होते है।
Ohlin ने यह भी कहा है कि देश के अन्दर उत्पादन के साधन गतिशील होते है ऐसे कितने उदाहरण मिलते है जैसे यूरोप से श्रम एंव पूंजी आस्ट्रेलिया, कनाडा एंव अमेरिका आदि देश में निर्मित हुए है।

द्वितीय Ohlin का यह भी मत है कि तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त न केवल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में लागू होता है। बल्कि अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार में समान रूप से लागू होता है।

तृतीय दो देशों के बीच भौगोलिक तथा प्राकृतिक अवस्थाओं में अन्तर के कारण उत्पादन सम्बन्धी स्थितियाँ उत्पन्न होती है जो देश के अन्दर भी ऐसी स्थिति आ सकती है।

चतुर्थ आवागमन लागत भी देशी तथा विदेशी व्यापार में समान रूप से वर्तमान है।

पंचमतः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के समान अन्तर्देशीय व्यापार के क्षेत्र में भी प्रतिबन्ध लगाये जा सकते है।

इसप्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के आधुनिक सिद्धान्त का उक्त सार यह है कि " दो देशों में व्यापार वस्तुओं की

से गतिशील है, किन्तु दो देशों के बीच उत्पत्ति के साधनों में गतिशीलता का अभाव है।

(5) प्रत्येक देश में उत्पादन उत्पत्ति समता नियम के अन्तर्गत होता है।

(6) दोनों देशों में उत्पत्ति के साधन परिमाणात्मक रूप से भिन्न है किन्तु गुणात्मक रूप से दोनों में समानता है।

(7) दोनों देशों के उपभोक्ताओं का अधिमान एक समान है।

(8) प्रत्येक देश के साधनों की मात्रा, मांग की दशाएं तथा उत्पादन की भौतिक दशाएं स्थिर है।

(9) दोनों देशों के बीच Free trade है।

Ohlin के उपयुक्त तथ्यों के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय तथा अन्तर्देशीय व्यापार में समता पाया तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए कोई पृथक सिद्धान्त की आवश्यकता नहीं बतलाया। Ohlin ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को अन्तर्देशीय व्यापार की एक विशेष अवस्था के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने स्वीकार किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार General equalibrium theory of value पर आधारित है तथा उसी का विस्तार है।

Ohlin का मत है कि श्रम विभाजन के आधार पर व्यक्ति की विशिष्टता

में और दो क्षेत्रों के बीच विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन की विशिष्टता में समानता है। अतः अन्तर्देशीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का कारण मुख्य रूप से मूल्यों में विभिन्नता होता है। मूल्यों में विभिन्नता तुलनात्मक रूप में अन्तर जब विभिन्न क्षेत्रों या देशों में रहता है तो अन्तर्राष्ट्रीय तथा अन्तर्देशीय व्यापार का जन्म होता है। लेकिन मूल्यों में अन्तर और सम्बन्ध स्थापित करने के लिए एक विनिमय दर निश्चित किया जाता है जिसे निम्न सारणी के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है -

Bटपक्ष साधन	साधन बंगला देश टका में	कीमतें भारतीय रुपये में	भारत में साधन कीमतें जबकि बंगलादेश टका का विनिमय दर = 2 रुपया	भारत में साधन कीमतें जबकि 1 बंगला देशी टका = 3 रुपया
A	1 टका	0.30	0.60 } भारत में सस्ता निर्यात	0.90 } सस्ता निर्यात
B	2 टका	0.40	0.80	1.20 } महंगा आयात
C	3 टका	0.50	1.00 } भारत में महंगा आयात	1.50
D	4 टका	0.60	1.20	1.80

माना कि भारत और बंगलादेश आपस में व्यापार कर रहे हैं बंगला देश में विभिन्न साधनों की कीमतें समान हैं। जबकि भारत में विभिन्न साधनों की कीमतें अलग अलग है। भारत में साधन A सबसे सस्ता है जबकि D सबसे मंहगा है। लेकिन व्यापार के लिए साधनों का सापेक्ष सस्तापन

उतना महत्वपूर्ण नही होता जितना कि समान मौद्रिक ईकाई के रूप में उनका निरपेक्ष सस्तापन होता है जो कि इन दोनो के बीच विनिमय दर पर निर्भर करता है। उपरोक्त सारणी में साधन A तथा B बंगला देश की अपेक्षा भारत में सस्ते है। लेकिन साधन C D बंगला देश की अपेक्षा भारत में महंगे पड़ते है। जब बंगला देश का एक टका 2 रूपया के बराबर है। लेकिन जब बंगलादेशी टका 3 रूपया के बराबर हो जाता है तो भारत में केवल A साधन ही सस्ता होगा और B, C, D साधन भारत में महंगे पड़ते है। अतः सस्ती वस्तुएं का आयात भारत बंगला देश से करेगा तथा महंगी वस्तुओं का निर्यात बंगलादेश करेगा। लेकिन विनिमय दर अन्तर्देशीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अन्तिम निर्धारक नही होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का मूल कारण दोनों प्रदेशो के बीच उत्पादन साधनों की पूर्तियों में पाये जाने वाले अन्तर ही होते है। मूल रूप से साधनों की सापेक्ष दुर्लभता, मांग की सापेक्षता में पूर्ति की कमी दो देशों के बीच व्यापार के लिए अनिवार्य है।

Factor endowment difference नही रहने पर दो देशो के बीच I.T. नही होता है क्योंकि दो देशो के बीच मुल्य का अन्तर नही हो पाता है जिसके फलस्वरूप दो देशो का Offer curve एक दूसरे को नही काट पाती है इसलिए I.T के लिए मुल्यो में अन्तर रहना

आवश्यक है। जिससे दो देशों का Offer c
एक दूसरे को काटते है। इसे चित्र द्वारा स
कर सकते है।

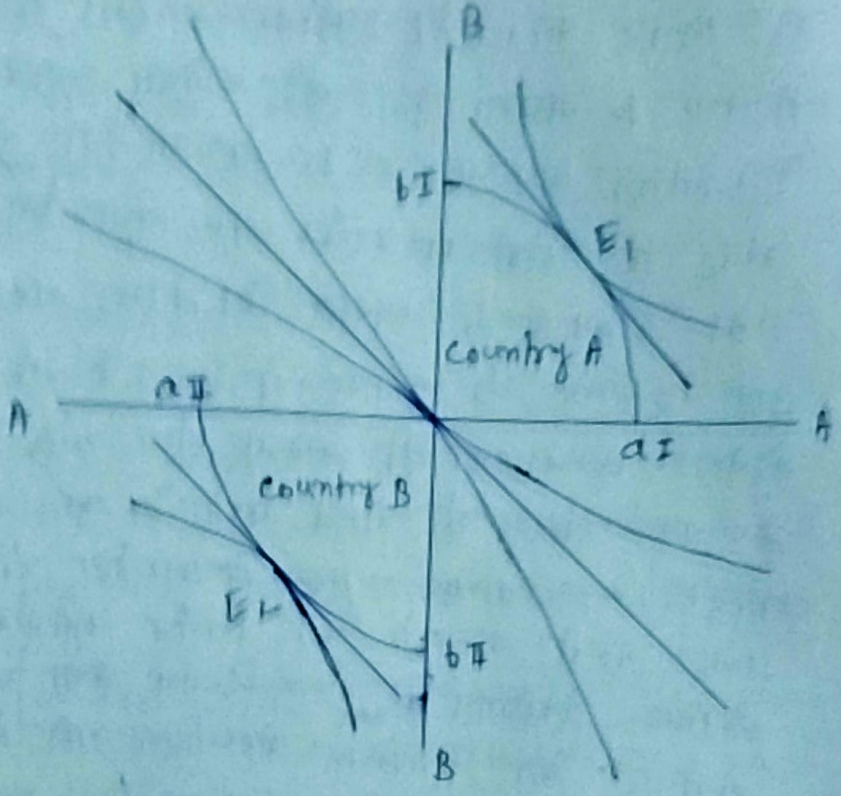

ऊपर के चित्र से स्पष्ट है कि A तथा B दो वस्तुएँ है और Country I तथा Country II दो देश है। इन दोनों देशों के बीच में मांग एवं पूर्ति एक समान है। इसलिए दोनों देशों का offer curve कभी भी एक दूसरे को नहीं काटता है। और इसलिए स्वतंत्र व्यापार रहने पर भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार दोनों देशों के बीच नहीं होगा। Ohlin के सिद्धान्त को निम्न चित्र से प्रदर्शित किया जा सकता है।

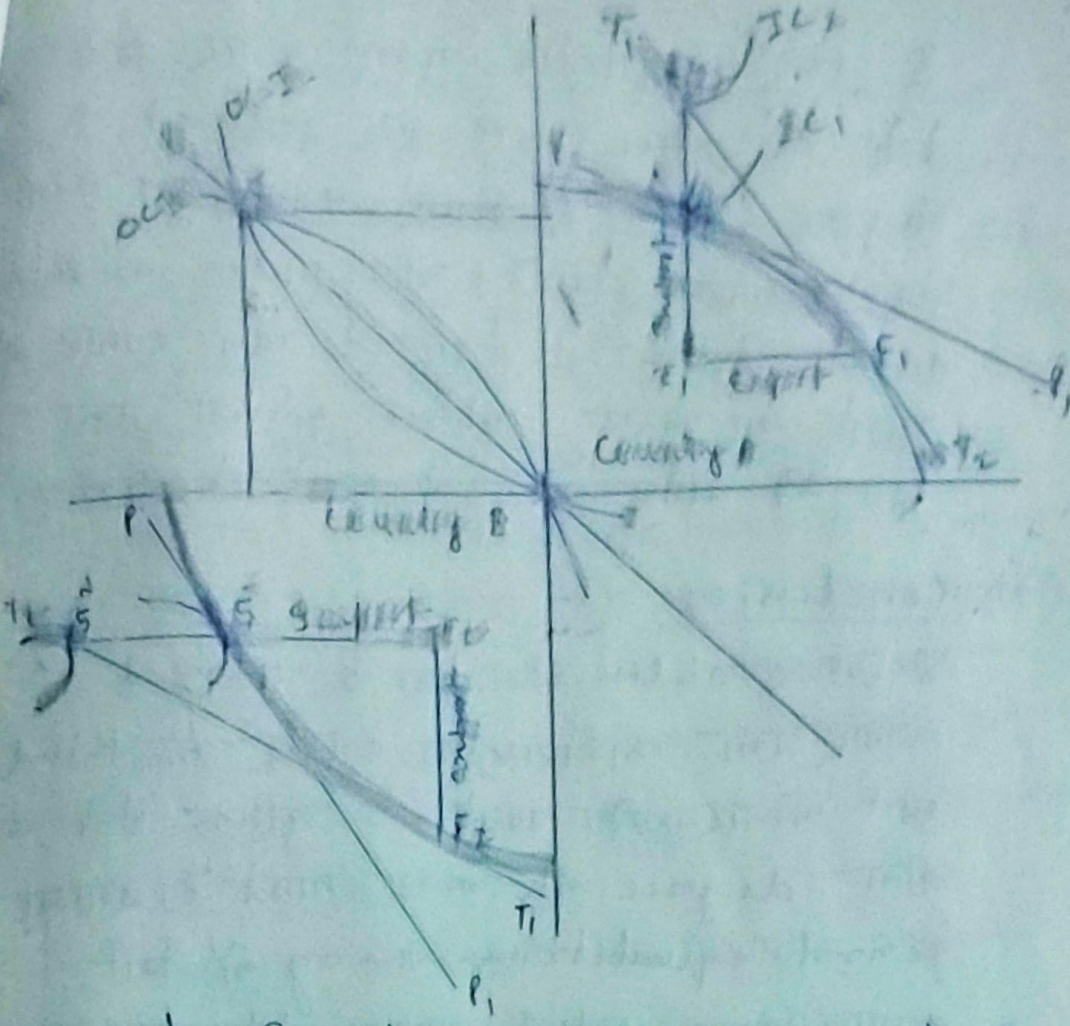

उपरोक्त चित्र मे Country I तथा Country II के बीच मे उपलब्धता मे अन्तर है और इसलिए दोनो देशो के बीच वस्तुओं के मूल्य मे सापेक्षिक अन्तर का जन्म होता है। और दोनो देशो के बीच अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का जन्म होता है। उपर के चित्र मे Country A r_1E_1 मात्रा A वस्तु का निर्यात करता है और r_2E_2 मात्रा Country B आयात करता है। ~~और Country B~~ ~~निर्यात~~ दूसरी ओर r_1E_1 मात्रा Country A आयात करता है और Country B r_2E_2 मात्रा निर्यात करता है। उपर के चित्र से स्पष्ट

है कि अन्तर्राष्ट्रीय मुल्य B पर दोनों देशों का offer curve एक दूसरे को T बिन्दु पर काटती है जिससे व्यापार की शर्तों का निर्धारण होता है। अतः Ohlin का सिद्धान्त बतलाता है कि दो देशों के बीच व्यापार में मुल्यों का अन्तर, सापेक्षिक दुर्लभता तथा मांग के सापेक्ष पूर्ति में कमी होना आवश्यक है

Conclusion

इसप्रकार Ohlin ने देश के भीतर के व्यापार तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के Kind का अन्तर नही मानते है बल्कि दोनो के बीच degree का अन्तर मानते है। इसलिए general equilibrium theory को देशी व्यापार तथा विदेशी व्यापार दोनो के लागू किया जाता है।

Criticism

प्रथमत: आलोचकों के अनुसार साधनों की सापेक्षिक उपलब्धता में अन्तर के कारण ही वस्तुओं के मुल्यों के विभिन्नता नही होती। बल्कि अन्य तत्व जैसे उत्पादन के technique में अन्तर, साधनों के गुण में अन्तर, उपभोक्ता की मांग में अन्तर तथा उत्पादन हर्द नियम के कारण भी देशों के वस्तुओं के मुल्यों में विभिन्नता उत्पन्न हो जाती है।

द्वितीय Haberler के अनुसार वस्तु का उत्पादन लागत उत्पादन साधनों के मूल्यों के द्वारा निर्धारित नही होती बल्कि उनके अनुसार वस्तुओं का मूल्य मुख्यतः इन वस्तुओं से प्राप्त उपयोगिता के कारण निर्धारित होती है।

तृतीय Ohlin का सिद्धान्त अवास्तविक है क्योंकि यह वस्तु एवं साधनों के बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यता पर आधारित है।

चतुर्थत: Wizantold के अनुसार यह सिद्धान्त आर्थिक संतुलन विश्लेषण पर आधारित है न कि विस्तृत सामान्य संतुलन की धारणा पर।

पंचमत: आलोचकों के अनुसार अगर उपभोक्ताओं के चलन में भिन्नता हो जाए तो Ohlin का सिद्धान्त लागू नही होगा।

षष्टमत: Ohlin के सिद्धान्त में साधनों के मूल्य निर्धारण में साधनों की मांग की अपेक्षा साधनों की पूर्ति को अधिक महत्व दिया गया है किन्तु वास्तविक जगत में साधनों की मांग में परिवर्तन हो जाए तो साधनों के मूल्य में परिवर्तन हो जाता है। इस सम्भावना की ओर Ohlin का ध्यान नही गया।

Dr Sandhya Rai
Dept of Economics